an>

Title: Need to include people belonging to Satnami, Suryavanshi and Ramnami community in different lists.

श्री लखन लाल साहू (बिलासपुर) ः छत्तीसगढ़ राज्य एवं अन्य राज्यों में निवासरत सतनामी, सूर्यवंशी एवं रामनामी को अनुक्रमांक 14 में चमार की श्रेणी में रखा गया है, जो अपमानित शब्द है, जबकि उक्त जाति के लोगों ने कभी जानवर काटने या उससे निकल चमड़े का कार्य नहीं किया है, इनके पूर्वज भी कभी उक्त कार्यों में लिप्त नहीं थे, अतः गाली के रूप में प्रयुक्त "चमार" शब्द से संबोधित करना या लिखना निंदनीय है। ब्रिटिश काल में भी उक्त शब्द के लिए सतनामी समाज के गुरूओं, राज महन्तों द्वारा अंग्रेज गवर्नर बटलर से आग्रह किया गया था। जिस पर उक्त शब्द का विलोपन किया गया था, गुरू घासीदास जी के सतनाम पंथ के अनुयायी सतनामी हुए तो सत्मार्ग पर चलना सात्विक भोजना करना अहिंसा करना अपना धर्म मानते हैं।

सतनामियों का इतिहास देखा जाये तो यह लोग मूलतः वर्तमान में नारनौल हरियाणा के निवासी थे, जो विभिन्न कार्यों में संलग्न थे, लेकिन औरंगजेब इनका धर्म परिवर्तन कर मुस्लिम बनाना चाहता था। जिसके लिए उन्होंने सैन्य बल का प्रयोग किया। विरोध में प्रथम बार सतनामी विजयी रहे, कुछ समय पश्चात् पुनः युद्ध में सनामियों की हार हुई और ये विभिन्न प्रांतों में पलायन कर गये। छत्तीसगढ़ में बाबा गुरू घासीदास जी सतनाम के प्रवर्तक हुए और उनके अनुयायी सतनामी कहलाए। इनके उपदेशों और कार्यों से प्रभावित हो (छत्तीसगढ़) के विभिन्न जाति धर्म के लोग अनुयायी हुए, जिन्हें सतनामी जाति के रूप में माना गया है।

अतः सरकार से मेरा आग्रह है कि उक्त समाज की मांग को ध्यान में रखकर अनुक्रमांक 14 से विलोपित कर सतनामी को अलग सूची क्रमांक में दर्ज किया जाये, जिससे उक्त समाज अपने आपको गौरवांवित महसूस करेगा।